नई किरन
भाग–3

नई किरन
(तीसरा भाग)

पाठ्यक्रम एवं सामग्री निर्माण विभाग
राज्य संदर्भ केन्द्र
साक्षरता निकेतन, लखनऊ-226 005

नई किरन
(तीसरा भाग)

रचना मण्डल

डॉ० एन० के० सिंह
श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'
डॉ० श्यामलाल कान्त वर्मा
डॉ० हीरालाल बाछोतिया
डॉ० जयपाल सिंह, "तरंग"
डॉ० टी० आर० सिंह
श्री श्यामलाल
डॉ० धर्म सिंह
श्री वीरेन्द्र मुलासी
श्री लायक राम 'मानव'
श्री विश्वनाथ सिंह

चित्रांकन

श्री डी० वी० दीक्षित
श्रीमती अलका दीक्षित
कु० पूनम शाही
कु० मीरा गुप्ता
श्री के० जी० सिंह

प्रकाशक

राज्य संदर्भ केन्द्र
साक्षरता निकेतन
लखनऊ—226005

मुद्रक

प्रकाश पैकेजर्स,
257—गोलागंज, लखनऊ।

मई, 1990

भूमिका

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना के उपरान्त प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य और कार्यक्रमों में व्यापक परिवर्तन संशोधन हुआ है। इस संशोधन का प्रभाव कार्यक्रम के प्रत्येक पक्ष पर पड़ा है। मूल साक्षरता सामग्री के निर्माण और उसकी प्रयोग विधि पर भी नवीन परिवर्तनों का असर स्वाभाविक था।

नई नीति के अनुसार निकेतन द्वारा प्रकाशित सभी प्रवेशिकाओं को संशोधित और पुनर्निर्मित किया गया है। कुछ नई प्रवेशिकाएं भी बनाई गई हैं। नई प्रवेशिकाओं में 'गढ़ प्रवेशिका', कुमायूँ भारती', आदि भारती' तथा 'नई किरन' मुख्य हैं। गढ़ प्रवेशिका गढ़वाल क्षेत्र के लिए, कुमायूँ प्रवेशिका कुमायूँ के लिए, आदि भारती सोनभद्र के लिए तथा नई किरन सामान्य रूप से शेष सभी क्षेत्रों के लिए बनाई गई है। नई किरन, नई राह के स्थान पर प्रस्तावित है।

इन प्रवेशिकाओं की कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं :—

०० प्रवेशिकाएं क्षेत्रीय रुचिओं और आवश्यकताओं पर आधारित हैं। इनमें केवल स्थानीय विषय और समस्याओं को ही नहीं, वरन् स्थानीय भाषा को भी प्रमुखता दी गई हैं। हमारा विश्वास है कि यदि प्रौढ़ ने अपनी बोली के आधार पर वर्ण और मात्राएं सीख लीं, तो वह मानक भाषा भी शीघ्रता से सीख सकता है, अतः स्थानीय बोली से मानक भाषा पर लाना सहज, सार्थक और शीघ्रगामी है।

०० सभी प्रवेशिकाएं एकीकृत विधा और मानकों पर आधारित हैं। एकीकृत का मूल तात्पर्य यही है कि साक्षरता, चेतना जागृति एवं व्यावसायिक दक्षता साथ-साथ चले। प्रौढ़ जो कुछ भी पढ़े उसका सुदृढ़ीकरण परीक्षण और मूल्यांकन भी साथ-साथ होता जाए। अतः प्रत्येक तीन अथवा चार पाठों के उपरान्त जांच पत्र दिए गए हैं। व्यावहारिक दक्षता के स्तर तक पहुंचने के लिए प्रारम्भिक स्तर की प्रवेशिका को 3 भागों में बांटा गया है। इसे यह भी कह सकते हैं कि अब प्रवेशिका 3 भागों में विभाजित है। प्रत्येक भाग का अपना स्तर है। उसी स्तर के आधार पर जांच पत्र और प्रमाण पत्र दिए गए हैं। भाषा, लेखन, उच्चारण तथा गणित के अभ्यासों को प्रवेशिका के साथ ही जोड़ दिया गया है।

०० इस प्रवेशिका के निर्माण में हमें डा० एन०के० सिंह, डा० एस०के० वर्मा एवं डा० हीरालाल बछौतिया का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। विधा, भाषा एवं चित्रांकन विशेषज्ञों में साक्षरता निकेतन के डा० टी० आर० सिंह, श्री श्याम लाल, डा० धरम सिंह, श्री लायकराम 'मानव' श्री के०जी० सिंह, श्री डी०वी० दीक्षित, कुमारी पूनम साही एवं कुमारी मीरा गुप्ता तथा पाठ्यक्रम एवं सामग्री निर्माण विभाग के अध्यक्ष, श्री वी०एन० सिंह ने अथक परिश्रम करके इस कार्य को पूरा किया। हम उपर्युक्त सभी महानुभावों के आभारी हैं।

आशा है यह प्रवेशिका राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल होगी। इस प्रवेशिका के विषय में सुधी विद्वानों की प्रतिक्रिया का हम स्वागत करेंगे।

शिवदत्त त्रिवेदी
निदेशक
राज्य संदर्भ केन्द्र।

नई किरन

तीसरा भाग

(पाठ इकाई विवरणिका)

क्रमांक	पाठ का नाम	गणित	विषय - क्षेत्र
1.	कोई तो चेते	इकाई, दहाई, सैकड़ा	परिवार - नियोजन/कल्याण
2.	ऊर्जा	रुपये-पैसे	वैकल्पिक ऊर्जा
3.	संत शेख सादी	रुपये - पैसे, जोड़ना, घटाना	चरित्र निर्माण
	जाँच-पत्र : 7 (पाठ 1 से 3 तक के लिए)		
4.	मंजिल है दूर मगर पा के रहेंगे (कविता)	तौल की जानकारी	राष्ट्रीय एकता/मूल्य
5.	ये पेड़	लम्बाई की माप	सामाजिक वानिकी
6.	बर्तनों के बच्चे	समय की इकाईयाँ	व्यावहारिक शिक्षा
	जाँच-पत्र : 8 (पाठ 4 से 6 तक के लिए)		
7.	रहें न लोग निरक्षर	घड़ी देखना	साक्षरता संकल्प
8.	हमारा देश	प्रतिशत	राष्ट्रीय मूल्य/देश-प्रेम
9.	पत्र-लेखन	अनुपात	व्यावहारिक साक्षरता
10.	कार्यात्मक साक्षरता	गणित का अभ्यास	शिक्षा का महत्त्व
	जाँच-पत्र : 9 (पाठ 1 से 10 तक के लिए)		
	प्रमाण-पत्र		

पाठ : 1

कोई तो चेते

दुर्दशा मूर्खता पक्षपात

[मोहन और मीरा बैठे हैं। दो बच्चे पढ़ रहे हैं। साफ-सुथरा घर। सुशीला का प्रवेश।]

मोहन : आओ सुशीला, आओ। कुछ परेशान जान पड़ती हो।

सुशीला : परेशानी के अलावा है ही क्या मेरी जिन्दगी में।

मीरा : ऐसा क्यों कहती हो दीदी ? घर - बार, खेती - बारी, बाल - बच्चे, सब कुछ तो दिए हैं भगवान ने। कमी किस बात की है ?

सुशीला : दो दिन मेरे घर में रह लो तो सब समझ में आ जाएगा।

मोहन : अरे समझा ! बच्चे दिन भर परेशान करते होंगे भाभी को। बड़े नटखट हैं। यही बात है न भाभी ?

सुशीला : तुम तो जानते हो मोहन, बड़े लाड़ - प्यार से पली थी मैं। घर में बस,एक छोटा भाई था। सब तरफ से चैन था। यहाँ तो आधा दर्जन....।

मीरा : तो कुछ दिन के लिए मायके चली जाओ दीदी। कुछ राहत मिल जाएगी।

सुशीला : यह तो तभी हो सकता है, जब कोई बच्चों को देखने वाला हो। अकेले रहेंगे तो एक-दूसरे का सिर फोड़ेंगे। अब याद आती है तुम्हारी बात, पर अब....।

मीरा : बात तो डाक्टरनी दीदी ने ठीक ही कही थी। मैंने मान ली, तुमने नहीं मानी। कितनी नेक थी उनकी सलाह।

सुशीला : हाँ, अभी तक याद है मुझे। उन्होंने कहा था– बच्चे आँगन की शोभा हैं, पर जब वे दो या तीन हों। ज्यादा होंगे तो आँगन की दुर्दशा हो जाएगी।

मोहन : गोपाल दादा को भी समझाया था डॉक्टर ने– बच्चों को तुम भगवान की देन समझते हो, यह तुम्हारी भूल है। असलियत तो यह है कि वे तुम्हारी अपनी इच्छा के प्रसाद हैं। चाहे जितने ले लो। (गोपाल का प्रवेश) लो, तुम्हें खोजते हुए दादा भी आ गए।

गोपाल : हाँ मोहन भाई, मैंने आप लोगों की बातें सुन

लीं। मान लेते हैं कि हमने मूर्खता की। आपका घर - बार देखता हूँ तो मन खुश हो जाता है।

मोहन : यह घर मेरा ही नहीं, आपका भी तो है। चाहें तो मेरी तरह आप भी जिन्दगी का रुख बदल सकते हैं।

सुशीला : सो कैसे ?

मीरा : डाक्टरनी दीदी की सलाह से।
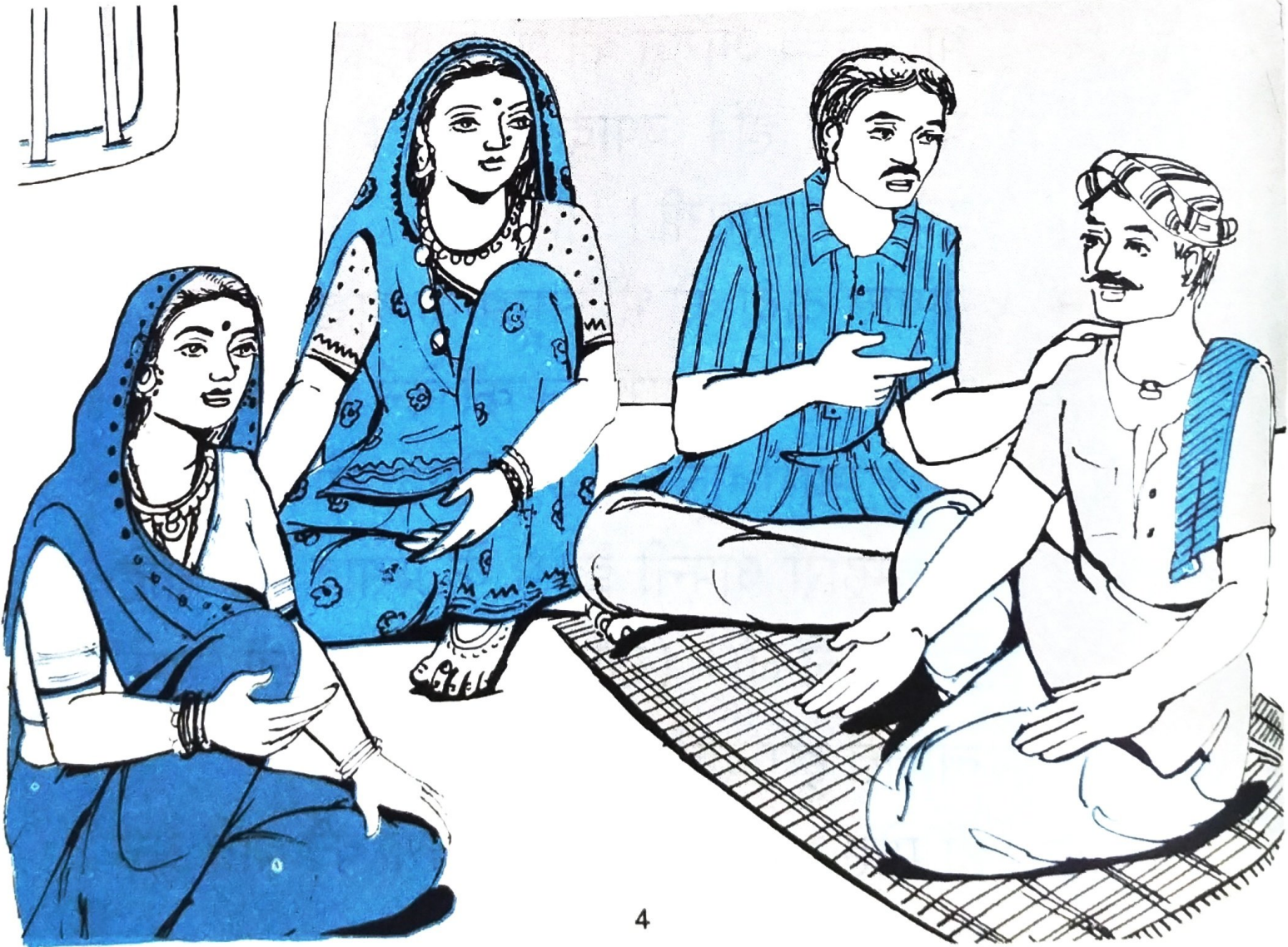
सुशीला : परन्तु ये राजी हों, तब न ?

मोहन : पति और पत्नी दोनों राजी हों तो परेशानी ही क्यों हो। पति चेते या पत्नी।

सुशीला : तुम ही फैसला कर दो देवर जी। तुम्हारी बात हम दोनों मानेंगे। पर पक्षपात न करना।

मोहन : तो फिर दादा ही चेतें। यही तरीका सरल और सुविधाजनक है।

सुशीला : ठीक है, ठीक है। कल ही घेर कर ले जाओ इन्हें।

मोहन : भाभी ! बात घेरने की नहीं, बचने की है। जितना घिरे हैं, उतना ही क्या कम है ! आगे सावधान हो जाएँ।

गोपाल : पर यह ठीक. . . . . ।

मोहन : आप चिन्ता न करें। दो बड़े बच्चों को मैं अपने साथ शहर लेता जाऊँगा। वहीं पढ़ाऊँगा। तीन बच्चों को तो भाभी ठीक से देख-सुन ही लेंगी।

सुशीला : क्या सचमुच.....?

मोहन : हाँ भाभी, सच। पर गोपाल भइया. . . . . ।

गोपाल : मैं कल ही चलूँगा तुम्हारे साथ। तुम्हारी भाभी ने मेरी बात नहीं मानी, मैं ही उनकी बात मान लेता हूँ। मेरी ही हार सही।

मोहन : हार - जीत की बात नहीं है दादा, एक नए जीवन की पहल करके आपने बाजी जीत ली। यह तो ऐसी जीत है, जो आपकी जिन्दगी में नई रोशनी ला देगी। घर खुशियों

से भर देगी। (भाभी से) अब तो प्रसन्न हैं न भाभी जी। कल ही मैं दादा को ले जाऊँगा डॉक्टर के पास।

(सब हँसते हैं।)

बोध प्रश्न :

1. **परिवार में अधिक बच्चे होने से क्या हानि है ?**
2. **कम बच्चे होने से क्या लाभ है ?**
3. **सुशीला और गोपाल क्यों परेशान थे ? उन्होंने अपनी परेशानी का क्या समाधान खोजा ?**

भाषा अभ्यास :

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ क्रम से नहीं दिए हैं। इन्हें क्रम से लिखिए :

रोशनी	= आराम	------	------
जिन्दगी	= राय	------	------
प्रसन्न	= बुरी हालत	------	------
मूर्खता	= जीवन	------	------
सलाह	= खुश	------	------
दुर्दशा	= बेवकूफी	------	------
राहत	= प्रकाश	------	------

इकाई - दहाई - सैकड़ा

समझिए :

एक अंक वाली संख्या को इकाई कहते हैं।

इकाई = 1 (जैसे - 1 2 3 4 5 6 7 8 9)

दो अंकों वाली संख्या में दाहिनी ओर वाला अंक इकाई तथा बायीं ओर वाला अंक दहाई का होता है।

जैसे -12 में 2 इकाई है और 1 दहाई है।

इसी प्रकार दाहिने से बायीं ओर का मान बढ़ता जाता है। तीन अंकों वाली संख्या में दहाई के बायीं ओर वाला अंक सैकड़ा होता है।

जैसे- 312 में 3 सैकड़ा 1 दहाई 2 इकाई।

3 सैकड़ा = 300, 1 दहाई = 10, 2 इकाई = 2

सब मिलाकर = 312 (तीन सौ बारह)

1. नीचे लिखी संख्याओं में सैकड़ा, दहाई और इकाई अलग करके लिखिए :

	सैकड़ा	दहाई	इकाई
532	------	------	------
225	------	------	------
475	------	------	------

2. जोड़िए :

3 2 4	2 4 5	5 4 3
+1 3 5	+6 1 0	+2 3 8

3. घटाइए :

6 5 4	5 2 5	7 8 6
–2 3 2	– 3 1 2	–2 3 4

पाठ : 2

ऊर्जा

स्रोत प्रकृति सौर-ऊर्जा उपयोग
परिश्रम संयंत्र शीघ्रता इस्तेमाल

विक्रमपुर की पाठशाला में गया प्रसाद जी आए। उन्होंने नई-नई बातें बताईं। फिर वे बोले– मैं

आज ऊर्जा के सम्बन्ध में भी चर्चा करना चाहता हूँ।

अर्जुन को टोक - टाक करने की बहुत आदत है। कहने लगा– पहले यह तो बता दीजिए कि ऊर्जा क्या है ? तब तो उसके सम्बन्ध में हमारे पल्ले कुछ पड़ेगा।

गया प्रसाद जी ने कहा– अर्जुन, एक शब्द में तो ऊर्जा समझाई नहीं जा सकती है। वह दिखाई भी नहीं देती। हम बोझा उठाते हैं, लकड़ी जलाकर खाना पकाते हैं, बैल खेत जोतते या गाड़ी खींचते हैं, कोयले का इंजन ट्रेन चलाता है। हमारे अंदर, बैलों के अंदर, कोयले में, लकड़ी में, पेट्रोल या डीजल में ऊर्जा है, जिसके कारण ये काम होते हैं। बिजली में भी ऊर्जा है। इसीसे कारखानों की बड़ी - बड़ी मशीनें चलती हैं, रोशनी होती है।

जहाँ से हमें यह ऊर्जा मिलती है, उसे हम ऊर्जा का स्रोत कहते हैं। ये स्रोत हमारे बनाए हुए नहीं हैं। कोयला, पेट्रोल, डीजल, प्रकृति में पहले से मौजूद
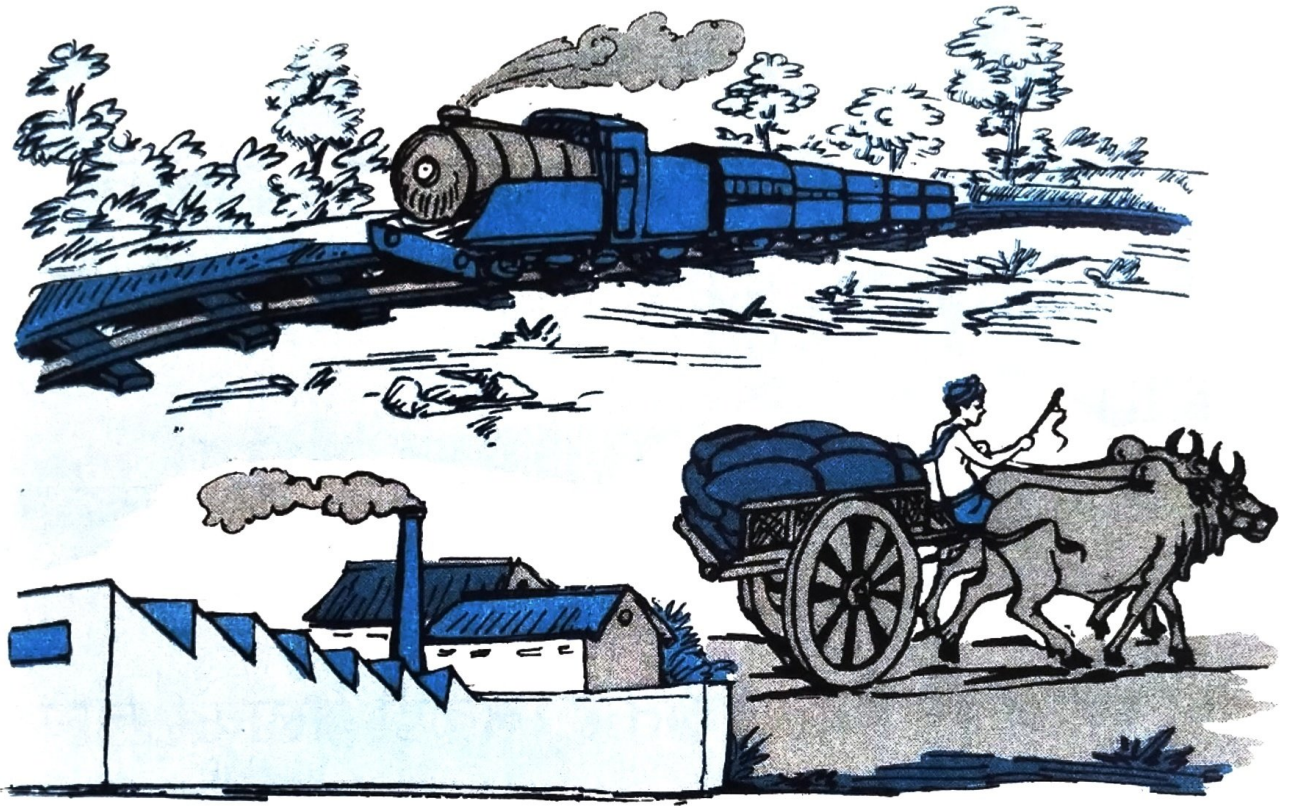
हैं। लेकिन इतने नहीं कि इनका मनमाना उपयोग करते रहें। जिस रफ्तार से इनका उपयोग हो रहा है, यदि उसमें कमी नहीं की गई तो कुछ चीजें तो पचास - साठ वर्ष में ही समाप्त हो जाएँगी। हाँ, जल ऐसा स्रोत अवश्य है, जो समाप्त नहीं होता, लेकिन वह सब जगह तो है नहीं।

इसलिए अब लोगों का ध्यान ऊर्जा के ऐसे स्रोतों की ओर गया है, जो कभी समाप्त नहीं होंगे।

इनमें एक तो है, सूर्य की ऊर्जा। इसका प्रयोग हम खाना पकाने के लिए 'सौर चूल्हा' या 'सोलर कुकर' में करते हैं। अनाज सुखाने, पानी गरम करने, बिजली बनाने तथा पानी का पंप चलाने में भी सौर - ऊर्जा काम आती है। कुछ स्थानों पर इस ऊर्जा को बैटरी में भरकर बसें भी चलाई जाती हैं।

बायो गैस या गोबर गैस ऊर्जा का एक और साधन है, जिसका उपयोग काफी होने लगा है। दो-चार जानवर रखने वाला किसान बिना किसी विशेष लागत और परिश्रम के गोबर गैस संयंत्र लगा सकता है। सार्वजनिक रूप से भी गोबर गैस संयंत्र स्थापित किए जा सकते हैं। इससे मिलने वाली गैस से घरों में रोशनी होती है, सफाई और शीघ्रता से खाना पकता है तथा बहुत अच्छी खाद भी मिल जाती है। इस ऊर्जा का इस्तेमाल छोटी - छोटी मशीनें चलाने में भी किया जाता है।

अब जगह - जगह हवा की ऊर्जा का भी प्रयोग
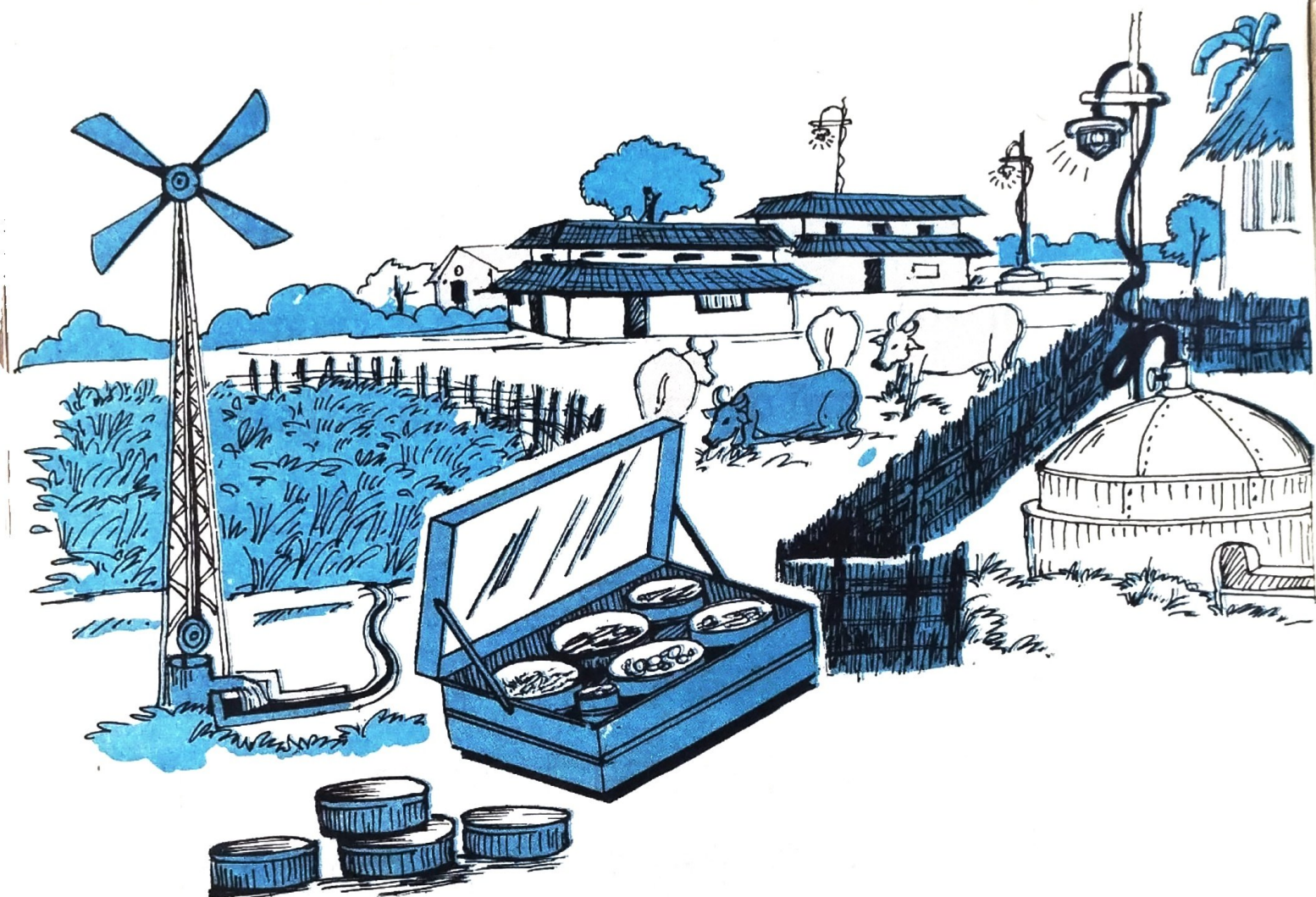
होने लगा है। हवा के जोर से जब चक्की के पंख घूमते हैं तो उससे पानी निकालने का पंप चलने लगता है।

इतना सब बताने के बाद अंत में गया प्रसाद-जी बोले— गोबर गैस के संयंत्र तो आप लोग आसानी से लगा सकते हैं। ब्लॉक के दफ्तर में जाइए, वहाँ से पूरी जानकारी मिल जाएगी। इसके लिए सरकार से सहायता भी मिलती है।

बोध प्रश्न :

1. हमें ऊर्जा किन-किन चीजों से मिलती है ?
2. हम सूर्य की ऊर्जा का इस्तेमाल किस प्रकार कर रहे हैं ?
3. गोबर गैस संयंत्र लगवाने के लिए क्या करेंगे ?

भाषा अभ्यास :

निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखिए :

जैसे : रात — दिन

रोशनी — ---------

अन्दर — ---------

गरम — ---------

समझिए :

रुपए - पैसे

1 रुपए में 100 पैसे होते हैं।

बीस रुपए पच्चीस पैसे को इस तरह लिखते हैं :

रु. 20.25 या रुपए - पैसे

20 – 25

लिखिए :

पच्चीस रुपए पचास पैसे =रु. -----------

या ----   ----

----   ----

साठ रुपए पचहत्तर पैसे =रु. -----------

या ----   ----

----   ----

पैंतीस रुपए तीस पैसे =रु. -----------

या ----   ----

----   ----

एक रुपए पाँच पैसे को इस तरह लिखते हैं :

रु. 1.05   या रुपए - पैसे

1 - 05

अब लिखिए :

पाँच रुपए आठ पैसे =रु. -----------

या ----   ----

----   ----

तेरह रुपए तीन पैसे =रु. -----------

या ----   ----

----   ----

पाठ : 3

संत शेख सादी

वृद्ध जन्म निर्धनता ईश्वर

सूफियों में एक बहुत बड़े संत हुए हैं। उनका नाम था— शेख सादी। एक दिन वह घोड़ी पर सवार होकर कहीं जा रहे थे। दोपहर का समय था। रास्ते में

उन्हें दो बूढ़े आदमी मिले। वे नंगे पैर पैदल चले जा रहे थे। शेख सादी घोड़ी से उतर पड़े। उन्होंने एक वृद्ध को घोड़ी पर बिठा दिया। दूसरे वृद्ध को अपनी चप्पलें दे दीं। खुद नंगे पाँव चलने लगे।

मानवता के ऐसे पुजारी शेख सादी का जन्म फारस में हुआ था। उनके माता-पिता बहुत ही गरीब थे। इसलिए शेख सादी का बचपन बड़ी निर्धनता में बीता।

शेख सादी बचपन से ही ईश्वर की खोज में लगे थे। उन्होंने ईश्वर के प्रेम में अपना घर - बार सब कुछ छोड़ दिया।

शेख सादी जब तक जीवित रहे, दूसरों की भलाई के लिए जूझते रहे। उन्होंने अपने लिए कभी कुछ नहीं किया। वे फारसी में कविताएँ भी लिखते थे। मानव जाति के कल्याण के लिए वे जीवन भर समर्पित रहे।

शेख सादी लोगों की सेवा करते - करते दुनिया से चले गए। वे आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी वाणी हमें आज भी मनुष्यता की राह पर चलने को प्रेरित करती है।

वे कहते थे– ''सब्र कड़ुवा होता है, पर उसका फल बड़ा मीठा होता है। मेहनत से मत भागो। दुखों से भयभीत न हो। अँधेरे में ही रोशनी छिपी होती है। छोटे से छोटे जीव, चींटी को भी पैरों से मत कुचलो। बुद्धिमान मनुष्य अपने हर एक काम से लोगों को

सद्बुद्धि के अतिरिक्त कुछ नहीं देता। अगर ज्ञान पाना चाहते हो, तो अच्छी - अच्छी किताबें पढ़ो।''

व्यवहार जगत में संत शेख सादी ने मनुष्यों को सावधान भी किया। कहा—''जो मनुष्य तुम्हारे सामने औरों की बुराई करता है, वही औरों के सामने तुम्हारी बुराई अवश्य करेगा। ऐसे मनुष्यों से सावधान रहो।''

हमें संत शेख सादी की शिक्षा को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

बोध प्रश्न :

1. संत शेख सादी का जीवन कैसा था ?
2. उन्होंने किस भाषा में कविताएँ लिखी थीं ?
3. उनके उपदेशों से क्या शिक्षा मिलती है ?

भाषा अभ्यास :

1. नीचे लिखे वाक्यों के लिए एक शब्द लिखिए :

जैसे : क्रोध करने वाला = क्रोधी

दया करने वाला = ---------

पूजा करने वाला = ---------

हिंसा करने वाला = ---------

प्रेरणा देने वाला = ---------

यात्रा करने वाला = ---------

1. जोड़िए :

	रुपए		पैसे
	15	.	25
+	18	.	40

	रुपए		पैसे
	28	.	15
+	27	.	65

जाँच - पत्र : 7 (पाठ 1 से 3 तक के लिए)

1. पढ़िए और लिखिए :

बायो गैस या गोबर गैस ऊर्जा का एक और साधन है, जिसका उपयोग काफी होने लगा है। दो-चार जानवर रखने वाला किसान बिना किसी विशेष लागत और परिश्रम के गोबर गैस संयंत्र लगा सकता है।

----

2. नीचे लिखे शब्दों के वाक्य बनाइए :

जैसे :

सार्वजनिक = अस्पताल सार्वजनिक स्थान है।

रोशनी = --------------------------------

पक्षपात = --------------------------------

नटखट = --------------------------------

निर्धनता = ---------------------

बुद्धिमान = ---------------------

3. हल कीजिए :

रुपए		पैसे
75	.	25
+24	.	75

रुपए		पैसे
90	.	00
-88	.	10

रुपए		पैसे
35	.	65
- 22	.	25

रुपए		पैसे
66	.	70
- 24	.	25

पाठ : 4

मंजिल है दूर मगर पा के रहेंगे

बढ़ चले आगे हम बढ़ते रहेंगे।
मंजिल है दूर मगर पा के रहेंगे।।

धर्म अलग, जाति अलग,
अलग - अलग लोग।
किन्तु सभी देते हैं
सबको सहयोग।

गंगा की धारा बन साथ बहेंगे।
मंजिल है दूर मगर पा के रहेंगे।।

माना हैं भिन्न-भिन्न,
फूलों के रंग।
किन्तु सभी उपवन की
शोभा के अंग।
इसी भाँति रंग अपने एक रहेंगे।
मंजिल है दूर मगर पा के रहेंगे।।
जन्मभूमि जननी की,
रखना है शान।
अर्पित कर देंगे हम,
तन, मन, धन, प्रान।
सुख-दुख जो आएगा, साथ सहेंगे।
मंजिल है दूर मगर पा के रहेंगे।।

डॉ० धरम सिंह

बोध प्रश्न :

1. **हम कब तक आगे बढ़ते रहेंगे ?**
2. **हम किस प्रकार भिन्न होकर भी एक हैं ?**
3. **हमें किसकी शान बनाए रखनी है ?**

भाषा अभ्यास :

नीचे दिए गए शब्दों से छाँटकर सही जोड़े बनाइए :

जैसे : **ठंडा × गरम**

सुख, जनम, खरा, मरण, दुख, खोटा, ऊँच, गरीब, ठंडा, नीच, अमीर, गरम

------ ------ ------ ------

------ ------ ------ ------

------ ------ ------ ------

तौल की जानकारी :

तौल की इकाई ग्राम है।

1000 ग्राम को 1 किलोग्राम कहते हैं।

100 किलोग्राम को 1 क्विंटल कहते हैं।

10 क्विंटल का 1 टन होता है।

जोड़िए :

कि. ग्रा.		ग्राम
34	.	250
+ 21	.	315

घटाइए :

कि. ग्रा.		ग्राम
65	.	635
- 32	.	312

पाठ : 5

ये पेड़

अक्सर प्रदूषण पर्यावरण वातावरण

[दरवाजे पर चाची, श्याम, सोहन आदि बैठे हैं। आपस में बातचीत कर रहे हैं।]

श्याम - (चाची से) क्या कहा चाची ! यह पेड़ तुम्हारा पोता है ?

चाची -हाँ, यह छोटा पेड़ मेरा पोता है और ये चारों पेड़ जो देख रहे हो, मेरे बेटे हैं।

सोहन - बेटे ! सो कैसे ?

चाची -पंडित जी निराले थे। जब कोई बच्चा होता, वह अपने हाथ से एक पेड़ लगाते। मुझसे कहते- यह पेड़ नहीं, तुम्हारा बेटा है। चारों बच्चों के होने पर उन्होंने चार पेड़ लगाए। बच्चों की तरह ही पाला-पोसा,इनकी देख-रेख की।

श्याम -तब तो चाचा जी को पेड़ बहुत प्रिय थे।

चाची -ठीक पुत्र के समान। अक्सर बातचीत में बतलाते- जो संसार में कोई नहीं दे सकता, वह पेड़ देते हैं। साफ हवा, फल-फूल, पानी सब कुछ तो इन पेड़ों से मिलता है। जहाँ पेड़ होते हैं, वहीं परमात्मा होता है।

सोहन -यही आप भी सोचती हैं चाची ?

चाची -सोचती ही नहीं, इस पर विश्वास भी करती

हूँ। इसीलिए जब घर में पोता हुआ तो मैंने यह पेड़ लगाया। पोते की तरह यह भी प्यारा है मुझे।

श्याम -परन्तु कितने लोग हैं, जो ऐसा सोचते हैं ?

चाची -इससे क्या ? मैंने तो अपनी बात कही। पंडित जी का तो विश्वास था कि एक बार बेटे तुम्हारा साथ छोड़ सकते हैं, परन्तु ये पेड़

पुत्रवादी मूल्य

यहीं रहेंगे, तुम्हारे पास। तुम्हारी सेवा करेंगे।

सोहन - हाँ चाची, यह तो आप ठीक कह रही हैं।

चाची - देखो न, मेरे बेटे तो जाकर शहर में बस गए। घर में होली-दिवाली पर ही आ पाते हैं। अगर ये मेरे चारों बेटे न होते तो कितनी अकेली रह जाती मैं।

श्याम - चाचा जी की सूझ तो निराली थी।

चाची - हाँ बेटा... कहा जाता है- जो पेड़ों को काटता है, परमात्मा उस पर नाराज होता है।

सोहन - वैसे, सारे लोग तो ऐसा नहीं मानते।

चाची - तुम्हारे सामने ही तो पिछले दिनों वन-विभाग के लोग आए थे। जगह-जगह पेड़ लगाने की सलाह दे रहे थे। कहते थे- ये पेड़ वायु का प्रदूषण रोकते हैं। शुद्ध हवा देते हैं। आदमी का जीवन स्वस्थ और सुखी बनाते हैं।
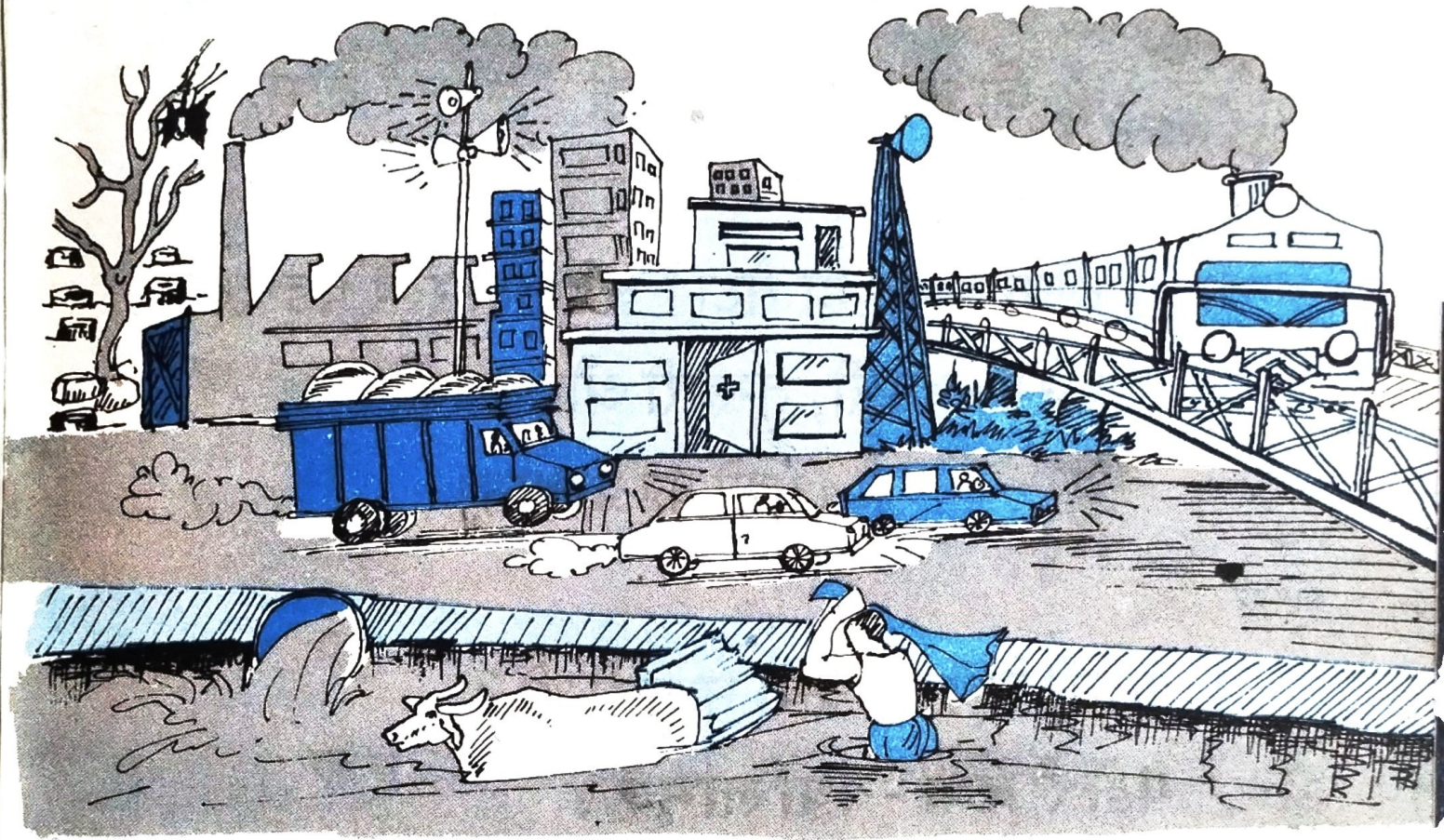
श्याम – शहर में पर्यावरण प्रदूषण की तो रोज चर्चा होती है।

चाची – वह सब तुम जानो। मैं तो कहती हूँ कि जहाँ भी जगह मिले, पेड़ लगाओ। उनकी रक्षा करो। उनसे भाई-चारा जोड़ो। ये तो तुम्हारे बिना रह भी लेंगे, परन्तु तुम इनके बिना नहीं रह सकते।

सोहन - तुमने तो आँखें खोल दीं चाची। अब सोचता हूँ, जो जमीन खाली पड़ी है, उसमें बीस पेड़ लगा दूँ। मौसम भी ठीक है।

चाची - ठीक कहते हो बेटा। बड़े होकर ये पेड़ रक्षा करेंगे-हमारी, तुम्हारी और सबकी।

(सभी का प्रस्थान)

बोध प्रश्न :

1. **चाची पेड़ों को क्या मानती थीं ?**
2. **पेड़ों से क्या - क्या लाभ हैं ?**
3. **चाची की बात का क्या असर हुआ ?**

भाषा अभ्यास :

1. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

जैसे :

सूर्य	=	**भानु**	**रवि**
पेड़	=	----	----
नदी	=	----	----
मकान	=	----	----

2. ''पेड़ हमारे जीवन साथी'' विषय पर तीन वाक्य लिखिए :

लम्बाई की माप :

लम्बाई की माप मीटर में होती है। 1000 मीटर का 1 किलोमीटर होता है। 1 मीटर में 100 सेंटीमीटर होते हैं।

अब बताइए :

1. कमीज का कपड़ा 8 रु. मीटर है। 5 मीटर कपड़े का दाम कितना होगा ?
2. कमल सिंह के घर से डाकघर की दूरी 320 मीटर है। वहाँ से बाजार की दूरी 875 मीटर है। उसे बाजार तक जाने में कितना चलना पड़ेगा ?

द्रव पदार्थों की नाप :

द्रव पदार्थों की नाप लीटर में होती है।

बताइए :

1. यदि दूध का दाम 8 रु. लीटर हो तो 5 लीटर दूध कितने में मिलेगा ?

पाठ : 6

बर्तनों के बच्चे

आनाकानी　　आवश्यकता　　दरअसल

बहुत समय पहले की बात है। किसी गाँव में चन्दर नाम का एक गरीब आदमी रहता था। चन्दर की दो लड़कियाँ थीं। वे जब सयानी हुईं तो चन्दर को

उनकी शादी की चिन्ता हुई। चन्दर ने अपनी बड़ी लड़की की शादी एक भले घर में तय कर दी।

शादी में बर्तन, कपड़ों आदि की आवश्यकता थी। चन्दर, साहूकार के यहाँ गया। साहूकार ज्यादा मुनाफा लेकर सामान किराए पर देता था। आदत के अनुसार पहले तो साहूकार ने आनाकानी की, फिर चन्दर को बर्तन दे दिए।

लड़की की शादी के बाद चन्दर, साहूकार के बर्तन लौटाने गया। उन बर्तनों के साथ चन्दर के भी कुछ बर्तन चले गए। जब चन्दर, साहूकार के पास अपने बर्तन वापस माँगने गया, तो साहूकार ने चन्दर को आड़े हाथों लिया। कहा- "मूर्ख, वे बर्तन तो मेरे बर्तनों के बच्चे हैं।" बेचारा चन्दर अपना-सा मुँह लेकर चला आया।

कुछ समय बाद चन्दर की दूसरी लड़की की शादी तय हुई। फिर चन्दर उसी साहूकार के पास गया।

साहूकार, चन्दर को बहुत मूर्ख समझता था। उसने तुरन्त ही चन्दर को बर्तन दे दिए। कई महीने गुजर गए। चन्दर बर्तन लौटाने नहीं गया। साहूकार घबराया। वह चन्दर के घर अपने बर्तन वापस लेने खुद जा पहुँचा।

साहूकार को देखते ही चन्दर रोने लगा। बोला– ''सेठ जी, मैं आपके पास कैसे आता? दरअसल, आपके बर्तन तो मर गए।'' साहूकार गुस्से

से तमतमा उठा। बोला– ‘‘दुष्ट, मेरे साथ धोखा करता है। बर्तन कहीं मरते हैं? मैं अभी काजी के पास जा रहा हूँ।’’ वह काजी के पास चला गया।

काजी ने चन्दर को बुलवाया। दोनों की पूरी बात सुनी। फिर काजी ने मुस्कराते हुए अपना फैसला सुनाया– ‘‘अगर बर्तनों के बच्चे हो सकते हैं तो बर्तन मर भी सकते हैं।’’

साहूकार अपना माथा पीटकर रह गया।

बोध प्रश्न :

1. साहूकार ने चन्दर के बर्तन लौटाने में क्या बहानेबाजी की ?
2. चन्दर ने किस प्रकार बदला लिया ?
3. इस पाठ से क्या शिक्षा मिलती है ?

भाषा अभ्यास : 1. नीचे लिखे मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

आड़े हाथों लेना : ------------------

तमतमा उठना : ------------------

आनाकानी करना : ------------------

2. नीचे लिखे शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द बनाइए :

लड़का ------ ठाकुर ------ सेठ ------

भला ------ देवता ------ राजा ------

समझिए :

समय : घंटा - मिनट - सेकेंड

एक दिन = 24 घंटा एक मिनट = 60 सेकेंड

एक घंटा = 60 मिनट

अब बताइए :

1. बस की चाल 20 किलोमीटर प्रति घंटा है। 100 किलोमीटर जाने में कितने घंटे लगेंगे ?

2. मोहन सिंह ने 7 बजकर 30 मिनट पर अपना खेत जोतना शुरू किया और 12 बजकर 45 मिनट पर समाप्त किया। बताइए, उसे खेतों की जुताई में कितना समय लगा ?

3. एक आदमी पैदल 4 किलोमीटर प्रति घंटे की चाल से जा रहा है। वह 2 घंटा 30 मिनट में कितनी दूर जाएगा ?

गुणा कीजिए :

32	63	54	37
×4	× 3	× 2	× 2
______	______	______	______
______	______	______	______

भाग कीजिए :

4) 16 (7) 35 (6) 42 (

जाँच-पत्र : 8 (पाठ 4 से 6 तक के लिए)

1. पढ़िए और लिखिए :

साफ हवा, फल - फूल व पानी पेड़ों से मिलता है।

----

2. सही शब्द चुनकर खाली जगहों में भरिए :

पेड़ ------ का प्रदूषण रोकते हैं। (आयु/ वायु)

चन्दर ने ------ पर बर्तन लिए।

(किराए/ ऋण)

साहूकार माथा ------ कर रह गया।

(घसीट/पीट)

3. खाली जगहें भरिए :

1 घंटे में ------ मिनट होते हैं।

1 मीटर में ------ सेंटीमीटर होते हैं।

2. हल कीजिए :

$$\begin{array}{r} 50 \\ \times\ 3 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 25 \\ \times\ 4 \\ \hline \\ \hline \end{array} \qquad 6)36($$

पाठ : 7

रहें न लोग निरक्षर

अक्षर - अक्षर यही कह रहा, रहें न लोग निरक्षर।
भाषा धर्म लिबास अलग हो,
पर मन में विश्वास सजग हो।
राष्ट्र एकता के हित कर दें, अपने प्राण निछावर।
इतना साफ हमारा घर हो,
बीमारी का जहाँ न डर हो।
मन बहलाएँ नाच - नाचकर, गाते रहें निरन्तर।
ऐपण से शोभित आँगन हो,
उबटन लगा चमकता तन हो।
काया रहे निरोगी हरदम, मेहनत को अपनाकर।
खेत - खेत में हरियाली हो,
गाँव - गाँव में खुशहाली हो।
नर - नारी सब कर्मशील हों, रहें स्वयं पर निर्भर।
रहें न लोग निरक्षर।

डॉ. जयपाल सिंह 'तरंग'

बोध प्रश्न :

1. अक्षर क्या कहते हैं ?
2. किस प्रकार के घर में बीमारी का डर नहीं रहता ?
3. हमें किसके लिए अपने प्राण निछावर करना चाहिए ?

भाषा अभ्यास :

1. नीचे लिखे वाक्यों में सही शब्द चुनकर भरिए :

हमें ------- पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। (प्राण/ऋण)

किसी को भी ------- नहीं होना चाहिए। (साक्षर/ निरक्षर)

2. 'रहें न लोग निरक्षर' कविता की तीन पंक्तियाँ लिखिए :

----
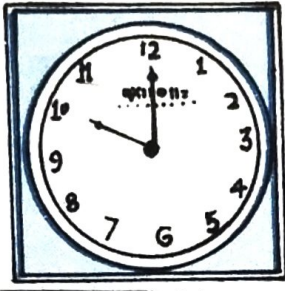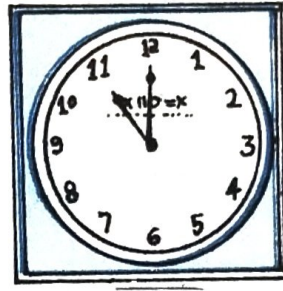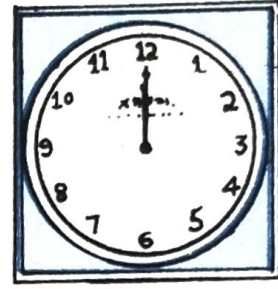
(1) (2) (3)

देखिए चित्र 1, इस घड़ी में ठीक 10 बजे हैं। छोटी सुई 10 पर और बड़ी ठीक 12 पर है।

अब देखिए चित्र 2, बड़ी सुई 1, 2, 3 आदि पर होती हुई एक पूरा चक्कर लगाकर फिर 12 पर आ गई है। इतनी ही देर में छोटी सुई 10 से आगे बढ़कर 11 पर पहुँच गई है। एक घंटे का समय बीत गया और अब ठीक 11 बजे हैं।

चित्र 3 में 12 बजे हैं। छोटी सुई 1 घंटे में 11 से चलकर 12 पर पहुँच गई और बड़ी सुई एक और चक्कर लगाकर 12 पर आ गई है। अब ठीक 12 बजे हैं और दोनों सुइयाँ 12 पर हैं।

इन घड़ियों में कितने बजे हैं:
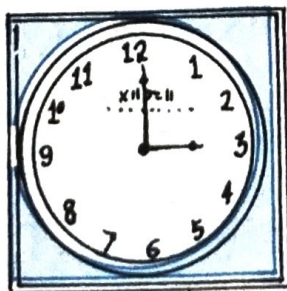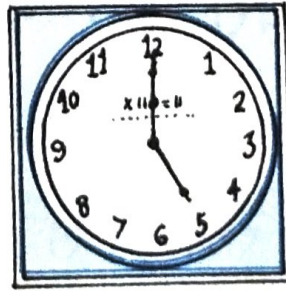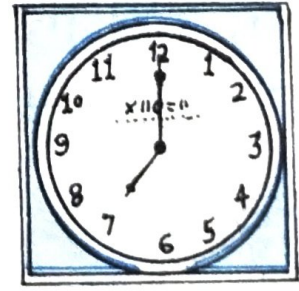
(1).......... (2)......... (3)..........

हमारा देश

निर्माण राष्ट्रपति संस्कृति प्राचीन
वीरांगना ऐतिहासिक द्वीप वेश-भूषा

हमारे देश का नाम भारत है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत है और बीच में विंध्याचल। हिमालय संसार का सबसे ऊँचा पर्वत है। इसकी अनेक चोटियाँ बारहों महीने बर्फ से ढँकी रहती हैं।

हिमालय पर्वत से बहुत-सी नदियाँ निकली हैं। पश्चिम की ओर से सिंधु, झेलम, चिनाब, रावी, व्यास और सतलज नदियाँ निकलकर भारत से पाकिस्तान की ओर जाती हैं। बीच में हिमालय से गंगा, यमुना, घाघरा और गंडक जैसी बड़ी - बड़ी नदियाँ निकली हैं। पूर्व में ब्रह्मपुत्र एवं उसकी सहायक नदियों ने हिमालय से निकलकर देश के विशाल मैदान का निर्माण किया।

विशाल मैदान के पश्चिम में थार का रेगिस्तान और दक्षिण में दक्षिण का पठार है। दक्षिण - पश्चिम में अरब सागर व पूर्व में बंगाल की खाड़ी है। दक्षिण में हिंद महासागर लहराता है। दक्षिण की प्रमुख नदियाँ हैं– नर्मदा, ताप्ती, महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी। उत्तर और दक्षिण भारत की इन सभी नदियों ने भारत की भूमि को बहुत ही उपजाऊ और हरा-भरा बनाया है। इनमें से कई नदियों पर बड़े - बड़े बाँध
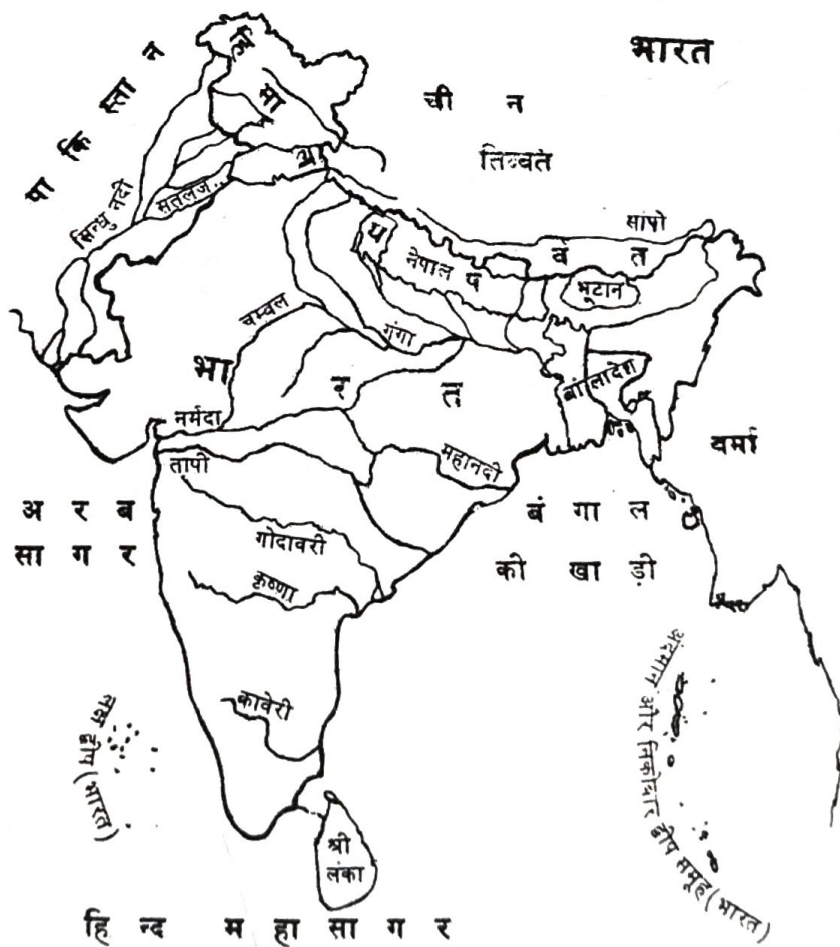
बनाए गए हैं। इन बाँधों से बिजली तैयार की जाती है। सिंचाई के लिए नहरें भी निकाली गई हैं।

भारत एक विशाल देश है। यह उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। पश्चिम में कच्छ से लेकर पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक और दक्षिण - पूर्व में बंगाल की खाड़ी में अंडमान निकोबार द्वीप समूह तक इसका विस्तार है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई 3, 200 कि०मी० तथा पश्चिम से पूर्व तक 2, 900 कि०मी० है। इसके पड़ोसी देश हैं– पश्चिम में पाकिस्तान और उत्तर में नेपाल तथा चीन। दक्षिण में श्रीलंका है। पूर्व में हमारे पड़ोसी देश बाँगलादेश और बर्मा हैं।

भारत की राजधानी नई दिल्ली है। यहीं से पूरे देश का शासन चलता है। यहीं राष्ट्रपति भवन है और संसद भवन भी। शासन की सुविधा के लिए यह देश कई राज्यों में बँटा हुआ है, जैसे– कश्मीर, पंजाब,

गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल, असम, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि।
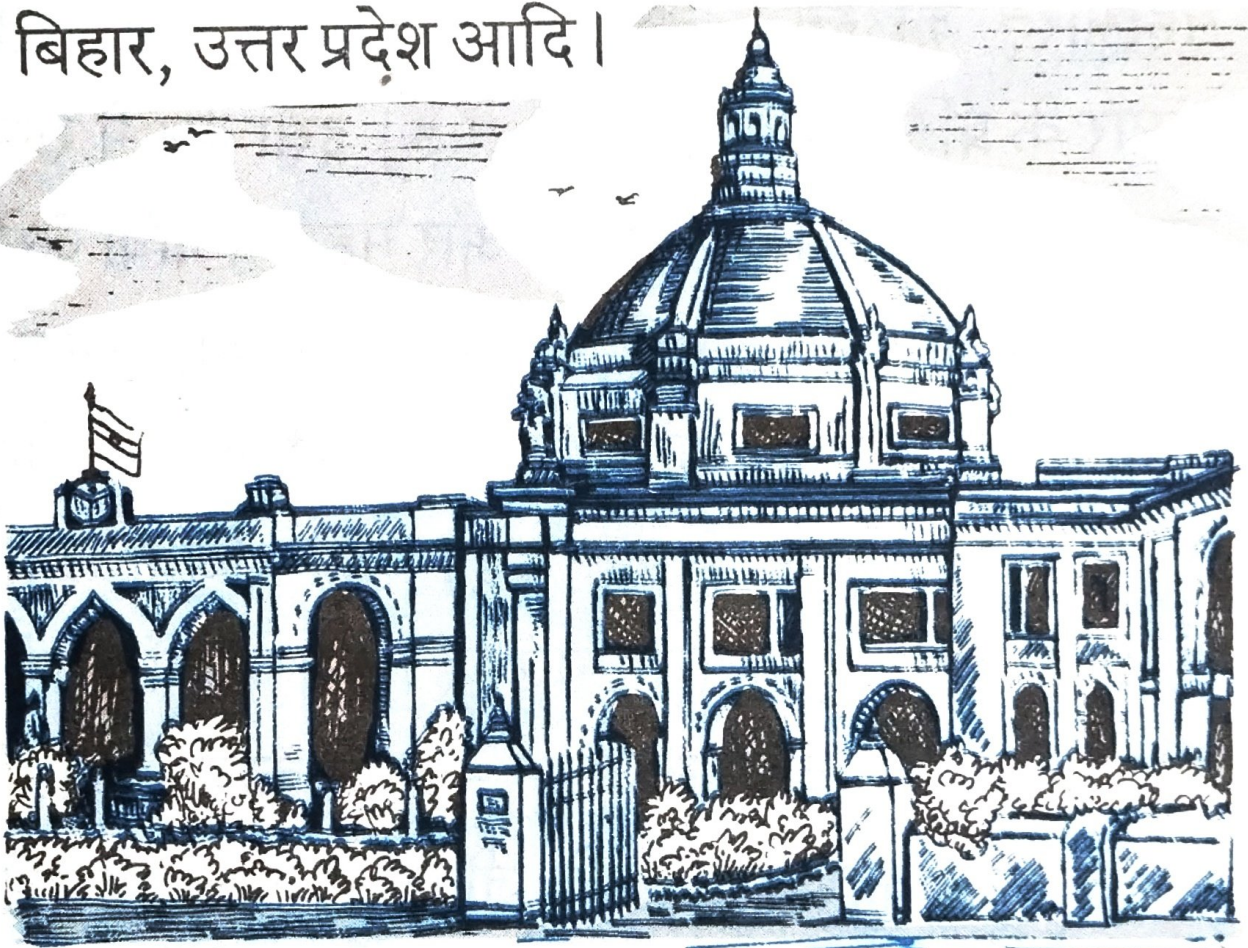
आबादी में उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा राज्य है। लखनऊ इसकी राजधानी है। बदरी - केदार, अयोध्या, मथुरा, प्रयाग, सारनाथ, कुशीनगर और काशी जैसे तीर्थ इसी राज्य में हैं। गंगा - यमुना ने इस राज्य को खूब उपजाऊ बनाया है।

भारत की संस्कृति बहुत ही पुरानी है। कई हजार वर्ष पूर्व लिखा ऋग्वेद संसार का सबसे प्राचीन

ग्रंथ है। यहीं बाल्मीकि ने रामायण और व्यास ने महाभारत की रचना की। रामायण और महाभारत संसार के प्रसिद्ध महाकाव्यों में से हैं। इसी देश में राम हुए, कृष्ण हुए। बुद्ध, महावीर और महात्मा गाँधी जैसे महापुरुष पैदा हुए। यहीं पर गार्गी, मैत्रेयी, सीता, सावित्री जैसी आदर्श नारियाँ हुई हैं। यहीं अशोक और अकबर जैसे महान सम्राट हुए। यहीं रजिया और झाँसी की रानी जैसी वीरांगनाएँ हुईं। इस देश में पुरुषों और महिलाओं, दोनों ने अपने - अपने कार्य - क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की। इन सबके जीवन से आज भी हमें शिक्षा मिलती है।

हमारे देश में कालिदास, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा और रसखान जैसे कवि हुए हैं। संगीत के लिए तानसेन का नाम पूरे देश में मशहूर है। अजंता, एलोरा, ताजमहल, उत्तर व दक्षिण के मंदिरों और ऐतिहासिक स्थलों को देखने के लिए सारे संसार से लोग आते हैं।

हमारे देश में अनेक धर्म हैं। अनेक भाषाएँ हैं। अनेक वेश - भूषा वाले लोग हैं। रीति - रिवाज भी अनेक हैं। किन्तु हम सभी भारतीय हैं। हम सब एक हैं। हमें भारतीय होने का गर्व है।

बोध प्रश्न :

1. **हमारे देश का क्या नाम है ?**
2. **हिमालय से कौन - कौन सी नदियाँ निकलती हैं ?**

3. हमारे पड़ोसी देश कौन-कौन हैं ?
4. भारत की राजधानी का नाम क्या है ?
5. संसार के सबसे प्राचीन ग्रंथ का नाम क्या है ?

भाषा अभ्यास :

1. नीचे के शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए :

जैसे : राजा — रानी

पुराना -------   नर -------

लड़का --------   औरत -------

2. नीचे लिखे शब्दों की सहायता से खाली जगहों को भरिए :

तानसेन	विशाल	हिमालय	नईदिल्ली	लखनऊ

क. भारत की राजधानी -------- है।

ख. भारत एक -------- देश है।

ग. -------- संसार का सबसे ऊँचा पर्वत है।

घ. संगीत के लिए -------- का नाम पूरे देश में मशहूर है।

प्रतिशत :

प्रतिशत का मतलब है– प्रति सैकड़ा। पाँच प्रतिशत का मतलब हुआ– सौ में पाँच। प्रतिशत इस प्रकार लिखा जाता है %। जैसे, ब्याज 5 प्रतिशत या 5%

इसे उदाहरण से समझिए :

पारबती ने सहकारी बैंक से 5% सालाना ब्याज की दर से 500 रु. उधार लिए। साल के अंत में कर्ज चुकाया। पारबती को 500 मूलधन और 25 रु. ब्याज, कुल 525 रु. देने पड़े।

अब बताइए :

1. रधुली ने 6% सालाना ब्याज की दर से 300 रु. उधार लिए। साल के अंत में उसे कुल कितने रु. वापस देने पड़ेंगे ?
2. रामी ने भेड़ पालने के लिए 2,000 रु. बैंक से उधार लिए। यदि ब्याज की दर 4% सालाना हो, तो साल के अंत में उसे कुल कितने रु. वापस देने पड़ेंगे ?

पाठ : 9

पत्र लेखन

पत्र का महत्त्व हम सबको मालूम है। दूर रहने वाले अपने सम्बन्धियों को पत्र लिखकर हम अपने समाचार दिया करते हैं। उनका पत्र प्राप्त कर हम उनका हाल जानते हैं। इस प्रकार, पत्र के द्वारा हम अपनी बात औरों तक पहुँचाते हैं।

पत्र मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं-

1. घरेलू या पारिवारिक पत्र।
2. सरकारी पत्र या आवेदन पत्र।
3. व्यापारिक पत्र।

घरेलू पत्र अपने सगे - सम्बन्धियों तथा आत्मीय - जनों को लिखे जाते हैं। इनमें पत्र - लेखक व्यक्तिगत बातों को लिखता है। इसके द्वारा ही वह अपना कुशल - क्षेम सूचित करता है और दूसरों का कुशल - क्षेम जानता है। ऐसे पत्रों में अपने से बड़ों, बराबर वालों और छोटों के लिए अलग - अलग प्रकार

के संबोधन, अभिवादन तथा स्व-निर्देश के शब्द लिखे जाते हैं।

(क) संबोधन

1. बड़ों के लिए — पूज्य/श्रद्धेय/आदरणीय आदि।
2. बराबर वालों के लिए — प्रिय/प्रियवर आदि।
3. छोटों के लिए — प्रिय/चिरंजीव आदि।

(ख) अभिवादन

1. बड़ों के लिए — सादर प्रणाम/सादर चरण-स्पर्श आदि।
2. बराबर वालों के लिए — नमस्ते/नमस्कार आदि।

3. छोटों के लिए	—	प्रसन्न रहो/ सस्नेह/ आशीर्वाद/ शुभाशीष आदि।

(ग) स्व-निर्देश – (पत्र के अंत में इनका उपयोग होता है)

1. माता-पिता और बड़ों के लिए	—	आपका प्रिय (पुत्र या अन्य जो सम्बन्ध हो- जैसे– भाई, पौत्र आदि)
2. मित्रों/समान वय वालों और अपने से छोटों को	—	तुम्हारा पिता/ तुम्हारा मित्र/ तुम्हारा बड़ा भाई/तुम्हारा चाचा आदि।

सरकारी पत्रों या आवेदन पत्रों में संबोधन के रूप में ''महोदय/ महोदया'' तथा स्व - निर्देश के रूप में ''भवदीय/ प्रार्थी'' का प्रयोग किया जाता है।

पिता को पत्र

ग्राम व
पत्रालय - लखना
जिला - इटावा
20 - 2 - 90

पूज्य पिता जी,
सादर चरण-स्पर्श,

मैं सकुशल हूँ। आशा है, आप भी कुशलपूर्वक होंगे। मुन्नी का नाम विद्यालय में लिखवा दिया है। वह रोज पढ़ने जाती है। माता जी तथा अन्य सभी लोग अच्छी तरह हैं। आपका पत्र न आने से हम सभी चिन्तित हैं। अपना कुशल - समाचार शीघ्र सूचित करने की कृपा करें।

आपका प्रिय पुत्र
बाबू लाल

लिफाफे या पोस्ट कार्ड पर पता

सेवा में,
श्री बद्री प्रसाद
ग्राम व पोस्ट - जाजमऊ
जिला- कानपुर

ग्राम व
पत्रालय - बीधापुर
जिला - उन्नाव
8 - 2 - 90

प्रिय केशवानंद,

नमस्कार,

मैं सकुशल हूँ। आशा है, तुम भी सानन्द होगे। आजकल काम अधिक आ पड़ा है। इसीलिए पत्र लिखने में विलम्ब हुआ। तुम्हारा पत्र भी नहीं आया। तुम लोगों का कुशल - समाचार न मिलने के कारण चिन्तित हूँ। कभी - कभी पत्र डाल दिया करो।

मैं दीपावली की छुट्टी में घर आऊँगा। उस समय तुमसे भेंट होगी। कभी उन्नाव आने का कार्यक्रम बना सको तो अवश्य आओ। कुछ दिन यहाँ भी सैर कर लो।

अपनी माता जी और पिता जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र
सुरेश

ग्राम व
पोस्ट - अजमतपुर
जिला - फतेहपुर
10 - 2 - 90

प्रिय मुन्नी,

सस्नेह शुभाशीर्वाद,

हम लोग सकुशल हैं। तुम लोगों की कुशलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। आशा है, तुम लोग सानन्द होगे। पिता जी के पत्र से मालूम हुआ कि तुमने छमाही परीक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। बड़ी प्रसन्नता हुई। पढ़ाई में ऐसे ही ध्यान लगाओगी तो सालाना परीक्षा में भी प्रथम ही रहोगी।

आशा है, माता जी अब पूरी तरह स्वस्थ होंगी। होली के अवसर पर हम सब लोग घर पर आएँगे। माता जी और पिता जी को हम सबका प्रणाम और छोटू को स्नेहाशीर्वाद। पत्र का उत्तर जल्दी भेजना।

तुम्हारा भैया
धर्मप्रकाश

सेवा में,

विकास खंड अधिकारी,

सरसौल

कानपुर

विषय :- भैंस खरीदने के लिए ऋण की आवश्यकता।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं एक भैंस खरीदना चाहता हूँ। इसके लिए सरकारी ऋण दिलाने की कृपा करें।

प्रार्थी

शंकर सिंह

ग्राम-हाथीपुर

4.1.90

पोस्ट - महाराजपुर

जिला - कानपुर (उ.प्र.)

अनुपात

समझिए : अनुपात का मतलब है- हिस्सा या भाग। जैसे-एक दुकानदार के पास 24 बोरियों में 8 बोरी दाल है, बाकी चावल है। 24 में यदि 8 बोरी दाल निकाल दें, तो $24 - 8 = 16$ बोरी चावल बच जाता है।

इस बात को हम यों भी कह सकते हैं कि दाल से चावल की बोरियाँ $16 \div 8 = 2$ गुनी हैं अर्थात् चावल और दाल की बोरियों में $2 : 1$ का अनुपात है।

अतः दो संख्याओं का अनुपात, भाग द्वारा उनकी तुलना है। इससे ज्ञात होता है कि एक संख्या दूसरी संख्या की कितनी गुनी है या उसका कौन-सा भाग है।

अब बताइए :

1. रधुली के पास 16 भेड़ें और 8 बकरियाँ हैं। बताइए, भेड़ और बकरियों में क्या अनुपात है ?

2. एक दुकान पर 20 किलोग्राम सेब और 5 किलोग्राम नाशपाती हैं। सेब और नाशपाती में क्या अनुपात है ?

3. एक चरवाहे के पास 9 गायें और 3 भैंसें हैं। बताइए, गाय और भैंसों में क्या अनुपात है ?

गुणा कीजिए :

33	62	71	84
× 3	× 4	× 5	× 2
______	______	______	______
______	______	______	______

पाठ - 10

कार्यात्मक साक्षरता

फार्म भरिए :

अभ्यास - 1

भारतीय मनीआर्डर/INDIAN MONEY ORDER

(तिथि डाकघर की तारीख-मोहर / DATE STAMP OF OFFICE OF SALE)

सेवा में पोस्टमास्टर
TO THE POSTMASTER

______________________ उप डाकघर/SUB P. O.

______________________ प्रधान डाकघर/HEAD P. O.

______________________ जिला/DISTT.

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

रु. अदा करें
Pay Rupees ______________________

रु. ....
Rs. ....

सेवा में/To

____

____

पिन/PIN | | | | | | |

____

______________________ ______________________

दिनांक/Date   भेजने वाले के हस्ताक्षर/Sender's Signature

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

प्रेषक डाकघर की नाम मोहर

डाकघर मनीआर्डर/P. O. Money Order
पावती/Acknowledgment

Name Stamp of the Office of issue

(भेजने वाले का नाम व पूरा पता/Sender's Name and full address)

____

____

पिन
PIN | | | | | | |

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

संदेश के लिए स्थान/Space for Communication   रु./Rs.   पै./P.

अभ्यास : 2 (क) डाकघर में रुपया जमा करने के लिए:

ब. बै./S. B. -103 जमा पर्ची/Pay in slip *ब. बैं./सा. ज./*S. B./T. D.

डाकघर बचत बैंक/Post Office Savings Bank

खाते का डाकघर/P. O. of account .... तारीख/Date....................................19

*बचत/1/2/3/5 वर्षीय सा. ज. खाता सं./Paid into *Savings/1/2/3/5 Year T. D. Account No. ....

(नाम/of Name...में

रु. Rupees (शब्दों में/in words)...

नकद/by Cash, चैक सं./Cheque No. .... तारीख/Dated..

को on ....बैंक/Bank द्वारा अदा किए।

.... रु. जमा के पश्चात् शेष (बचत बैंक लिपिक द्वारा भरा जाए)

Balance after deposit Rs. ....(To be fiiled by the S. B. Clerk)
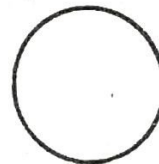
बचत बैंक लिपिक/S. B. Clerk तारीख-मोहर/Date-stamp द्वारा/by.............................

* जो लागू न हो उसे काट दें Strike out whichever is not applicable. सुरक्षित रखने की अवधि 6 वर्ष/Period of preservation 6 years.

अभ्यास : 2 (ख) बैंक में रुपया जमा करने के लिए:

इलाहाबाद बैंक
ALLAHABAD BANK

क्रम सं. S. No.	स्क्रा. सं. SCROLL NO.	आद्य. INITIALS	खा. प. सं. L. F. NO.	दर्ज किया POSTED

शाखा/BRANCH.................... ....19....

जमा कीजिए चालू खाता संख्या/CREDIT Current Account Number

नाम/OF...

....

रु. शब्दों में.
RS. IN WORDS ....

....

नकद/चेक Cash/Cheque	रु. Rs.	पै. P.
पीछे बताये विवरण के अनुसार DETAILS AS PER REVERS		

खजांची/CASHIER पारण प्राधिकारी/PASSING AUTHORITY जमा करनेवाला DEPOSITED BY ....

नकदी/चेक (उसी शाखा, अन्य स्थानीय शाखाएं, प्रत्येक राष्ट्रीय समाशोधन केन्द्र-बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, नई दिल्ली/ अन्य बाहरी चेक) हेतु अलग-अलग पर्चियाँ भरें I USE SEPARATE SLIPS FOR DEPOSITING CASH/CHEQUES-SAME BRANCH/OTHER LOCAL BRANCHES/EACH NATIONAL CLEARING CENTRE-BOMBAY, CALCUTTA, MADRAS, NEW DELHI/OTHER OUTSTATION CHEQUES.

अभ्यास : 3 (क) डाकघर से रुपया निकालने के लिए:

एस. बी.–7
S. B.- 7

रुपया निकालने का प्रार्थना-पत्र

APPLICATION FOR WITHDRAWAL

इस फार्म के साथ पास-बुक अवश्य होनी चाहिए

PASS BOOK MUST ACCOMPANY THIS FORM

डाकघर में स्थित ....

डाकघर बचत बैंक खाता सं. ....दिनांक..................19..............................

POST OFFICE SAVINGS BANK ACCOUNT .... P.C.

ACCOUNT NO. ....DATE.. 19 ....

कृपया मुझे/नीचे दिये गये हस्ताक्षर वाले संदेशवाहक को (शब्दों में)...

.... रु. का भुगतान करें और इस रकम को मेरे/हमारे उपर्युक्त बचत बैंक खाते में डाल दें।

Pay self messenger whose signature is given below the sum of Rupees (in words)...

.... and debit the amount to my/our S.B. account mentioned above.

इस निकासी के बाद इस खाते में बकाया रकम (शब्दों में)..

.... रु. हो जायेगी।

The balance in the account after this withdrawal will be Rupees (in words) ....

सन्देशवाहक का नाम/Name of messenger..

....

....

सन्देशवाहक के हस्ताक्षर/
Signature of messenger

सत्यापित/Attested

जमाकर्त्ता के हस्ताक्षर/अंगूठे का निशान
Signature, thumb-impression of depositor

....

जमाकर्त्ता के हस्ताक्षर Signature of depositor.. दिनांक/Dated...

फार्म को सुरक्षित रखने की अवधि 10 वर्ष अंतिम निकासियों के लिए और 6 वर्ष अन्य निकासियों के लिए
Preservation period of the form-10 years for final withdrawals and 6 years for other withdrawals

अभ्यास : 3 (ख) बैंक से रुपया निकालने के लिए:

इस पर्ची के साथ पास बुक का होना जरूरी है/PASS BOOK MUST ACCOMPANY THIS ORDER FORM

इलाहाबाद बैंक
ALLAHABAD BANK

क्रम सं. S. No.	स्क्रा. सं. SCROLL NO.	आद्य. INITIALS	खा. प. सं. L. F. NO.	दर्ज किया POSTED

शाखा/BRANCH....................

..............................19....

कृपया मुझे रुपये

PLEASE PAY SELF RUPEES ....

RS. IN WORDS ....

मेरे/हमारे खाते में नाम डालकर भुगतान करें।
AND DEBIT MY/OUR ACCOUNT..

रु.
RS. ....

बचत खाता संख्या
SAVINGS BANK A/C NO. ....

जमाकर्ता/DEPOSITOR (S)

बताइए :

1. देवी दीन के पास 312 भेड़ें थीं। वह 255 भेड़ें और खरीद लाया। अब उसके पास कितनी भेड़ें हो गयीं ?
2. तुलसा ने 526 रु. का ऊन और 240 रु. का शहद बेचा। उसे कुल कितने रुपए मिले ?
3. गंगा राम के पास 235 पेड़ अमरूद के हैं और 152 पेड़ आम के। उसके पास कुल कितने पेड़ हैं ?
4. भीमा के पास 675 रु. थे। उसने 252 रु. का आलू का बीज खरीदा। अब उसके पास कितने रु. बचे ?
5. महेश के खेतों में 265 किलो गेहूँ और 328 किलो धान पैदा हुआ। बताइए, गेहूँ से धान कितना अधिक पैदा हुआ ?
6. यदि एक भेड़ का दाम 212 रु. हो, तो 4 भेड़ें कितने में मिलेंगी ?
7. गोपाल ने 82 कि.ग्रा. आलू बेचे। यदि आलू का भाव 3 रु. किलो हो, तो उसे कितने रु. मिले ?
8. यदि एक भेड़ से 220 ग्राम ऊन निकलता हो, तो ऐसी ही 4 भेड़ों से कितना ऊन प्राप्त होगा ?
9. मसूर की दाल 6 रु. किलो है। यदि कस्तूरी के पास 72 रु. हों तो वह कितने किलो दाल खरीद सकती है ?

जाँच-पत्र : 9 (पाठ 1 से 10 तक के लिए)

(पूर्णांक – 100)

1. पढ़िए और उत्तर दीजिए :

25

भारत एक विशाल देश है। यह कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। पश्चिम में कच्छ से लेकर पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक और दक्षिण-पूर्व में अंडमान निकोबार द्वीप-समूह तक इसका विस्तार है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई 3,200 कि.मी. तथा पश्चिम से पूर्व तक 2,900 कि.मी. है। इसके पड़ोसी देश हैं- पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर में नेपाल और चीन। दक्षिण में श्रीलंका है। पूर्व में हमारे पड़ोसी बाँगला देश और बर्मा हैं।

पठन समय :

पठन गति (शब्द प्रति मिनट) :

यहाँ से काटें

नीचे दिए गए सवालों के जवाब उनके सामने लिखिए-

1. भारत दक्षिण में कहाँ तक फैला हुआ है ?

2. उत्तर से दक्षिण तक भारत की लम्बाई कितने कि.मी. है ?

---

3. भारत के पश्चिम में कौन-सा पड़ोसी देश है ?

---

4. भारत के उत्तर में कौन - से देश हैं ?

---

2. इमला लिखिए : (25 शब्दों का इमला बोलें) 5

---

3. पाँच सब्जियों के नाम लिखिए : 5

1.--------2.--------3.--------

4.--------5.--------

4. अपने किसी मित्र या सम्बन्धी को एक पत्र लिखिए। पत्र पर तिथि, पूरा नाम व पता होना चाहिए। 15

अपना पता ------------------

तिथि : ------------------

लिफाफे पर पाने वाले का नाम व पता लिखिए :

5. जोड़िए : 5

65	76
+34	+82

6. घटाइए : 5

78	83
-35	-68

यहाँ से काटें

7. गुणा करिए : 5

8. भाग दीजिए : 5

```
  34        93      8)88(      9)54(
× 3       × 8
____      ____

____      ____
```

9. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 5

1. एक लीटर दूध का दाम 5 रुपए है, तो 10 लीटर दूध का दाम बताइए ? -----------

2. रामदास ने भेड़ पालने के लिए 2,000 रुपए बैंक से उधार लिए। यदि ब्याज की दर 4% सालाना हो तो साल के अंत में उसे कुल कितने रुपए वापस देने पड़ेंगे ? -----------

10. व्यावहारिक जानकारी :

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर उनके सामने लिखिए : 25

1. हमारे देश का नाम क्या है ? -----------

2. भारत की राजधानी कहाँ है ? ----------

3. हमारे राष्ट्रीय झंडे में सबसे ऊपर कौन-सा रंग है ? -----------

4. उत्तर प्रदेश की राजधानी कहाँ है ? -------

5. शादी के समय लड़की की उम्र कम से कम कितनी होनी चाहिए ? ----------

6. टी.बी. से बचने के लिए कौन-सा टीका लगाया जाता है ? ----------

7. पोलिया से बचने के लिए बच्चे को कौन-सी दवा पिलाई जाती है ? ----------

8. सड़क पर किस तरफ चलना चाहिए ? ----

9. एक साल में कितने महीने होते हैं ? -------

10. आपके ब्लॉक या वार्ड का नाम क्या है ? ----

यहां से काटें

प्रतिभागी का नाम : ------------------------------------
पता : --
प्रवेश तिथि : --------------------
अनुदेशक/अनुदेशिका के हस्ताक्षर : ----------------
तिथि : --------------------------------

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन

कार्यक्रम : -------------------------------

परियोजना : -------------------------------

जिला : --------------------------- **उत्तर प्रदेश**

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/ कुमारी ------------------------ सुपुत्र/पत्नी/ सुपुत्री -------------------- ने सन् --------------- में चलाए गए प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में 'नई किरन' भाग III को पूरा कर लिया है।

पर्यवेक्षक/प्रेरक | ग्राम प्रधान | अनुदेशक

तारीख ------

राष्ट्रगान

जन - गण - मन - अधिनायक, जय हे
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब - सिंध - गुजरात - मराठा
द्राविड़ - उत्कल - बंग
विन्ध्य - हिमाचल - यमुना - गंगा
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय - गाथा,
जन - गण मंगल - दायक जय हे
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।